महावीरा कृषि समाचार

YEAR 3 | EDITION 5 सितंबर, 2025 www.rmphosphates.com

एग्रीकल्चर News:

खराब नहीं होगा एरोपोनिक विधि से तैयार आलू का बीज, सीपीआरआई ने तैयार की तकनीक

देशभर के किसानों के लिए अच्छी खबर है। अब एरोपोनिक विधि से तैयार किया आलू का बीज खराब नहीं होगा। केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (सीपीआरआई) शिमला ने आलू के बीज को सख्त बनाने की विधि तैयार की है। यानी अब इन विट्रो प्लांट हार्डनिंग तकनीक से आलू के मिनी ट्यूबर का उपचार होगा तो वह मिट्टी में बोने तक की प्रक्रिया में खराब नहीं होगा। मिनी ट्यूबर छोटे आकार के आलू को कहते हैं, जो 5 से 25 मिमी व्यास के होते हैं। एरोपोनिक तकनीक से उगाने पर यह मुलायम होते हैं। इसे सख्त करने के बाद बोया जाएगा तो भी मिट्टी के अंदर इस पर आवश्यक दबाव नहीं पड़ेगा।

संस्थान के **वैज्ञानिक डॉ. के धर्मेंद्र कुमार** ने बताया कि इन विट्रो विधि से आलू के मिनी ट्यूबर से उच्च आर्द्रता को खत्म किया जाता है। इन विट्रो कठोरता में कोको पीट (नारियल की भूसी) या रेत जैसे रोगाणुरहित माध्यम का उपयोग किया गया।

RMPCL

तुरंत एक्सपर्ट कृषि सलाह व समाधान पाये, आज ही हमसे कॉल द्वारा जुड़े : 8956926412

MAHAVEERA ZYRON

आलू की प्रगतिशील खेती

आलू (Potato) भारत की एक प्रमुख फसल है, जिसका उपयोग सब्ज़ी, चिप्स, फ्रेंच फ्राई, व अन्य प्रसंस्कृत उत्पादों के रूप में किया जाता है। प्रगतिशील खेती का मतलब है कि आधुनिक तकनीकों, उन्नत किस्मों और वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करके अधिक उत्पादन और मुनाफा प्राप्त करना।

जलवायु एवं मृदा

- **आलू ठंडी जलवायु** में अच्छी उपज देता है।
- **20-25°C** तापमान इसके लिए उपयुक्त होता है।
- **दोमट मिट्टी** जिसमें जल निकास की अच्छी व्यवस्था हो, सर्वोत्तम होती है।
- **pH मान:** 5.5 – 6।

खेत की तैयारी

- **खेत को गहरी जुताई** करें, फिर 2-3 बार हैरो चलाकर मिट्टी भुरभुरी करें।
- **गोबर की खाद** या कंपोस्ट 20-25 टन/ हेक्टेयर डालें।
- अंतिम जुताई के समय **NPK खाद** मिलाएं।

RMPCL
आ गया है एकसाथ 5 पोषक तत्वों वाला
5 का दम
महावीरा ज़िरोंन सभी फसलों के लिए मान्य
MAHAVEERA ZYRON

बीज का चयन और उपचार

- स्वस्थ व रोगमुक्त 30-50 ग्राम के टुकड़े (आंखों सहित) इस्तेमाल करें।
- बीज को कार्बेन्डाजिम या थायरम 2.5 ग्राम/किलोग्राम से उपचारित करें।

बुवाई की विधि

- **कतार से कतार:** 60 सेमी
- **पौध से पौध:** 20 सेमी
- **गहराई:** 5-8 सेमी
- **बीजदर:** 25-30 क्विंटल/हेक्टेयर

खाद और उर्वरक

आलू की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन
(अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 48:40:40)

अवधि	Mahaveera Ziron Power Plus	MOP	Urea	Symtron	Amitron-Z	Baleco	Bortry
	KG	KG	KG	KG	ML	ML	ML
बुवाई के समय	250	66	35	4	0	0	0
25-30 दिन बाद में	0	0	35	0	0	200	0
50-55 दिन बाद में	0	0	35	0	250	0	200
कुल मात्रा	250	66	105	4	250	200	200

जल घुलनसील उर्वरक 4-5 ग्राम / लीटर पानी मे	25-30 दिन की अवधि मे 19:19:19 , 45-50 दिन की अवधि मे 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि मे CN+B + 00:52:34 का तथा 80-85दिन की अवधि मे 13.00.45/ 00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करें।

उत्पादन

- **सामान्य:** 250-350 क्विंटल/हेक्टेयर
- **प्रगतिशील तकनीको से:** 400-500 क्विंटल/हेक्टेयर तक

RMPCL किसान भाइयों की हर परेशानी का सिर्फ एक ही इलाज
महावीरा ज़िरोंन, वॉटर सॉलयुबल खाद और सूक्ष्मतत्वों का साथ

महावीरा एग्री एड्वाइज़री

आलू का मुख्य रोग कौन सा है??

पोटेटो ब्लाइट आलू का झुलसा रोग, जिसे लेट ब्लाइट भी कहा जाता है ताकि इसे आलू के एक अलग रोग, अर्ली ब्लाइट से अलग किया जा सके, आलू की पत्तियों और कंदों पर हमला करता है जिससे सड़न होती है। यह गर्म, गीले मौसम में सबसे आम है। यही रोगाणु टमाटर को भी प्रभावित करता है।

आलू पर सफेद रोग क्या है ??

सफेद फफूंद (जिसे कभी-कभी स्क्लेरोटिनिया स्टेम रॉट भी कहा जाता है) एक मृदाजनित फफूंदजनित रोग है जो स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम के कारण होता है, जो आलू और कई अन्य चौड़ी पत्ती वाली फसलों (400 से अधिक पौधों की प्रजातियां) को प्रभावित करता है।

आलू में समान्य स्कैब या स्कैब रोग के बारे मे जानकारी दे ??

- रोग फफूंद की वजह से होता है।
- इस रोग के प्रमुख लक्षण पौधो कंदो पर दिखाई पड़ता हैं।
- कंदो मे हल्के भूरे रंग के दिखाई फोड़े के समान स्केब पड़ते है।
- जो की कुछ उभरे और कुछ गहरे स्केब दिखाई पड़ते है जिसके कारण कंद खने योग्य नही रह जाते।

तुरंत एक्सपर्ट कृषि सलाह व समाधान पाये, आज ही हमसे कॉल द्वारा जुड़े: 8956926412

RMPCL
महावीरा ले कर आया है अपने किसान भाइयों के लिए
उत्तम जल घुलनशील उर्वरक उम्दा क्वालिटी के साथ

प्याज की खेती में मुख्य रोग बताइए तथा रोगों से बचाव के उपाय की जानकारी दीजिएगा ??

प्याज की खेती में कई रोग लगते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:
आर्द्रगलन, बैंगनी धब्बा रोग, झुलसा रोग, मृदुरोमिल आसिता, प्याज का कंद, और आधार विगलन।

रोगों से बचाव के उपाय:

- स्वस्थ बीजों का प्रयोग करें।
- फसल चक्र का पालन करें।
- खेत में उचित जल निकासी सुनिश्चित करें।
- रोगग्रस्त पौधों को हटा दें और नष्ट कर दें।
- कीटनाशकों और कवकनाशकों का उपयोग करें।
- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें।

महावीरा यशोगाथा

बैरुलाल विजय गवली
सताना, नाशिक
फसल- प्याज
प्रोडक्ट- महावीरा ज़िरोंन

इस वर्ष मैंने अपनी 20 एकड़ प्याज की फसल में महावीरा ज़िरोंन का उपयोग किया और परिणाम बेहद शानदार मिले।महावीरा ज़िरोंन में मौजूद 5 पोषक तत्वों की शक्ति ने फसल को हरा-भरा और स्वस्थ बनाए रखा। प्याज के कंद चमकदार और भारी बने।

मैं इस परिणाम से बेहद खुश हूँ और सभी किसान भाइयों को सलाह दूँगा कि वे कम से कम एक बार महावीरा ज़िरोंन का उपयोग अवश्य करें।

गुरशरन सिंह
मोहाली, पंजाब
फसल- आलू
प्रोडक्ट- महावीरा ज़िरोंन

मैंने अपनी सभी फसलों में महावीरा ज़िरोंन का उपयोग किया और हर बार शानदार परिणाम मिला है। इस सीजन मैंने आलू की फसल में 5 बैग प्रति एकड़ और सरसों की फसल में 3 बैग प्रति एकड़ महावीरा ज़िरोंन डाला। आलू की फसल हरी-भरी है, कंद चमकदार और भारी हो गए हैं। मैं सभी किसान भाइयों को सलाह देना चाहता हूँ कि वह कम से कम एक बार अपनी फसल में महावीरा ज़िरोंन का इस्तेमाल जरूर करें और खुद भी फर्क देखें।

RMPCL
तुरंत एक्सपर्ट कृषि सलाह व समाधान पाये, आज ही हमसे कॉल द्वारा जुड़े : 8956926412